Class- VIII
Sub. Sanskrit

VIJAYANT
PAGE NO.:
DATE:

पाठ - 1
सुभाषितानि (सुन्दर वचन)
श्लोक-

① गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

अर्थ- गुणवान व्यक्ति में गुण गुण ही होते हैं। वे गुणहीन व्यक्तियों को प्राप्त करके दोष बन जाते हैं। जैसे स्वादिष्ट जल से युक्त नदियाँ समुद्र में मिलकर पीने योग्य नहीं होती हैं।

② साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥

अर्थ- साहित्य संगीत और कला से रहित व्यक्ति साक्षात् पूंछ व सींग के बिना पशु यानि जानवर के समान है। जो घास को खाये बिना भी पशु के समान जीवित है। ये उन पशुओं का अत्याधिक सौभाग्य है।

VIJAYANT
PAGE NO.:
DATE:

व्याकरण

① तद्भव शब्दों के संस्कृत शब्द

कंजूस	कृपणः
कड़वा	कटुकम्
पूँछ	पुच्छः
लोभी	लुब्धः
मधुमक्खी	मधुमक्षिका
तिनका	तृणम्

② नीचे दिये वाक्यों में कर्तृपद व क्रियापद अलग कीजिए।

1) सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।
2) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
3) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।
4) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।
5) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।

	कर्त्ता (कर्तृपद)	क्रियापद
1)	दोषाः	भवन्ति
2)	गुणाः	भवन्ति
3)	मधुमक्षिका	जनयेत्
4)	पिशुनस्य मैत्री	नाशयति

रचना चतुर्वेदी